शिक्षा, बाल साहित्य और विज्ञान

डॉ.कृष्ण कुमार मिश्र

डॉ.कृष्ण कुमार मिश्र ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से रसायन विज्ञान में पीएच-डी. की उपाधि प्राप्त की। आप टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान मुंबई के होमी भाभा विज्ञान केन्द्र में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। लोकप्रिय विज्ञान लेखक के रूप में आपकी अपार ख्याति है जोकि हिन्दी में आपके व्यापक लेखन से निर्मित हुई है। आपके 250 से अधिक लेख तथा 22 पुस्तकें प्रकाशित हैं। राजभाषा गौरव पुरस्कार, होमी जहाँगीर भाभा स्वर्ण पुरस्कार, शताब्दी सम्मान, राजभाषा भूषण पुरस्कार, इस्वा सम्मान सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित डॉ.मिश्र मुंबई में निवास करते हैं।

बाल साहित्य बच्चों की कल्पना को पंख लगाने का काम करता है। वह बाल मन के चिंतन के क्षितिज को विस्तार देता है। बाल साहित्य की उपयोगिता तथा प्रासंगिकता को सभी शिक्षाशास्त्रियों तथा विचारकों ने रेखांकित किया है। बाल साहित्य की आवश्यकता हर काल खंड में रही है। लेकिन आज के तकनीकी युग में इसकी उपादेयता बढ़ गयी है। ऐसा इसलिए क्योंकि तकनीकी ने बच्चों के जीवन में बाल साहित्य के लिए गुंजाइश तथा स्पेस को और कम कर दिया है। एक ऐसे दौर में जब बच्चे कुछ ही वर्ष के होते ही स्मार्ट फोन, लैपटॉप, जैसी युक्तियों से सुपरिचित हो जाते हैं तथा इन्हें चलाने की कला सीख लेते हैं। ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि उन्हें किस्से, कहानियों, कविताओं तथा छंदों से जोड़े रखा जाए। इसमें बाल साहित्यकारों की भूमिका बढ़ जाती है। बाल मनोभावों के अनुरूप विज्ञान साहित्य का सृजन वर्तमान समय की जरूरत है। इससे उनमें वैज्ञानिक सोच विकसित करने में मदद मिलेगी। बच्चों में शुरू से ही उनके आसपास के परिवेश तथा उसमें घटित होने वाली घटनाओं के बारे जानने-समझने की जिज्ञासा होती है। हमें उस कौतूहल तथा जिज्ञासा को बढ़ावा देना होगा। साहित्य की भूमिका ज्ञान पिपासा को पोषित करने की होनी चाहिए।

विज्ञान ने अंतरिक्ष, चिकित्सा, कृषि, सूचना-प्रोद्यौगिकी, रक्षा-अनुसंधान आदि क्षेत्र में अकल्पनीय प्रगति कर लिया है। ऐसे में यह आवश्यक हो गया है कि वैज्ञानिक सोच विकसित करने की नींव बचपन से ही डाली जाए। इसके लिए बाल-विज्ञान साहित्य के विकास से अच्छा कोई साधन हो ही नहीं सकता। केवल वैज्ञानिक खोजों, उपकरणों, नियमों, सिद्धांतों, परिकल्पनाओं, तकनीकों, आविष्कारों, उपकरणों आदि को केंद्र में रखकर कथानक गढ़ लेना ही विज्ञान साहित्य नहीं है। वस्तुतः विज्ञान साहित्य एक खास दृष्टिबोध है जो व्यक्ति की प्रश्नाकुलता का समाधान करता है। यह हमारे आसपास घट रही घटनाओं के मूल में जो कारण हैं, उनका क्रमबद्ध, विश्लेषणात्मक एवं तर्कसंगत बोध कराता है, जिसे प्रयोगों की कसौटी पर जांचा-परखा जा सके। बाल साहित्यकारों को साहित्य के वैज्ञानिक पक्ष को अपने लेखन में शामिल करने की आवश्यकता है। बच्चों के लिए लिखे जाने वाले वैज्ञानिक साहित्य की भाषा, सरल, सुबोध और व्यावहारिक शब्दों से युक्त होनी चाहिए। साथ ही साथ यह भी आवश्यक है कि यह ज्ञान-सामाग्री बच्चों तक सचित्र और मनोरंजक रूप से पहुँचे, क्योंकि चित्रों के माध्यम से बच्चे किसी भी चीज को

सरलता से समझ लेते हैं। राष्ट्रीय बाल साहित्य अकादमी के गठन के अवसर पर स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि, "मैं तो किसी भी क्षेत्र में किफायत करना पसन्द करूंगा यहाँ तक कि भोजन के क्षेत्र में किफायत की बात सोची जा सकती है पर बच्चों को बौद्धिक विकास का भोजन न मिले ऐसा विचार तो आना ही नहीं चाहिए।"

बाल विज्ञान साहित्य का उद्देश्य

वैज्ञानिक सोच को कल्पनात्मक एवं मनोरंजक स्वरूप प्रदान करना ही बाल विज्ञान साहित्य लेखन है। संक्षेप में विज्ञान साहित्य का लक्ष्य बच्चों के मन में विज्ञान-बोध का विस्तार करना है, ताकि वे अपनी निकटवर्ती घटनाओं का अवलोकन वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ कर सकें। लेकिन वैज्ञानिक आविष्कारों एवं विचारों का यथावत् वर्णन करना विज्ञान साहित्य नहीं है। यह वैज्ञानिक पत्रकारिता का विषय तो हो सकता है लेकिन इसे विज्ञान साहित्य की संज्ञा देना उचित नहीं है। कोई भी लेखनकार्य साहित्य की गरिमा तभी प्राप्त कर सकता है, जब उसमें समाज के कल्याण की भावना निहित हो। क्योंकि 'साहित्य ही समाज का आईना होता है' तथा साहित्य को कभी भी समाज से पृथक करके नहीं देखा जा सकता। कोई भी नया वैज्ञानिक आविष्कार अथवा विचार लोकहितकारी हुए बगैर विज्ञान साहित्य का हिस्सा नहीं बन सकता। सर्वप्रथम यह जानना जरूरी है कि वह कौन-सा विशिष्ट गुण है जो विज्ञान साहित्य को सामान्य साहित्य से पृथक कर, उसे अलग पहचान देता है? सामान्य साहित्य पूर्णतया कोरी-कल्पनाओं एवं अतिश्योक्तियों से भरा होता है जिसका उद्देश्य सिर्फ और सिर्फ मनोरंजन होता है। जबकि विज्ञान साहित्य पूरी तरह प्रमाणिक तथ्यों एवं सिद्धान्तों पर आधारित होता है जिसका उद्देश्य ज्ञानवर्धन होता है।

बाल साहित्य तथा बाल विज्ञन साहित्य की स्थिति

देश में बीसवीं सदी में काफी बाल साहित्य रचा गया है। श्रीधर पाठक तथा अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' इसमें बहुत अहमियत रखते हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान, रामधारी सिंह 'दिनकर', सोहनलाल द्विवेदी तथा रामनरेश त्रिपाठी ने अपने लेखन से बाल साहित्य को समृद्ध किया है। इन रचनाकारों का साहित्य हमारे लिए विरासत की तरह हैं। लेकिन यह भी एक यथार्थ है कि हिन्दी में बाल साहित्य की कोई स्थापित परंपरा जैसी चीज देखने में नहीं आती। ऐसा इसलिए क्योंकि बाल साहित्य के सृजन की कोई सुदृढ़ कड़ी तथा नैरंतर्य फिलहाल नहीं दिखायी देता। अगर हम बाल विज्ञान साहित्य की बात करें तो फिर स्थिति ज्यादा ही सोचनीय नज़र आती है। ऐसा इसलिए क्योंकि देश में हिन्दी में बालविज्ञान लेखन करने वाले उंगलियों पर गिने जा सकते हैं। वैसे तो कहा जाता है कि देश में करीब 3500 से भी अधिक हिन्दी विज्ञान लेखकों का विशाल समुदाय है। लेकिन उनमें उच्च गुणवत्ता के स्तरीय लेखक मुश्किल से 5 से 7 प्रतिशत ही हैं। इनमें नियमित लेखक कम हैं, ज्यादातर कभी कभार लिख देने वाले लेखक हैं। लेकिन बाल विज्ञान साहित्य के लेखकों की बात की जाय तो उनकी संख्या और भी कम है। यह बमुश्किल दो अंकों में होगी। विज्ञान लेखकों के द्वारा अब तक विज्ञान के विविध विषयों और विधाओं में करीब 10,000 से भी अधिक पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। परन्तु इनमें से बाल विज्ञान साहित्य वाली पुस्तकों की संख्या बहुत कम है। किसी देश के बच्चों का मानसिक विकास स्तर ही उसके सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक विकास का आधार होता है। इसलिए इसको कभी भी कैसे भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। बल्कि इसके सृजन के अलावा अब तक के कार्यों के प्रकाशन को संग्रहीत कर, गाँव-गाँव, बच्चे-बच्चे तक पहुँचाने का सार्थक प्रयास करने की आवश्यकता है। बाल साहित्य में विज्ञान की आवश्यकता की पूर्ति के साथ-साथ यह भी देखना होगा कि उसका लाभ महानगर से लेकर दूर-दराज के पिछड़े गाँव तथा कस्बों तक के बच्चों को भी मिले। उसमें सभी वर्गों, क्षेत्रों एवं परिस्थितियों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

बाल साहित्य की चुनौतियाँ

बाल साहित्य लेखन की सबसे बड़ी चुनौती भाषा-शैली होती है। लेखन की भाषा सदैव सरल और बोधगम्य होनी चाहिए। छोटे बच्चों के अन्दर जिज्ञासा होती है। वे नई चीजों को जानना और समझना चाहते हैं। कुछ वैज्ञानिक बातों को उदाहरण के माध्यम से आसानी से समझाया जा सकता है। लेकिन यह बहुत अफसोस की बात है कि विज्ञान-सम्मत लिखने के चक्कर में कुछ साहित्यकार साहित्य के मर्म को ही भुला देते हैं। ऐसी स्थिति में उनका विज्ञान-बोध भी आधा-अधूरा रह जाता है और साहित्य लेखन भी। उनके द्वारा लिखी गई रचना बे-सिर-पैर की कपोल कल्पना बन कर रह जाती है। पठनीयता और विज्ञान की कसौटी दोनों का निर्वाह करना ही विज्ञान लेखक की सबसे बड़ी चुनौती होती है। बाल-विज्ञान साहित्यकार का काम ही होता है, वैज्ञानिक तथ्यों का सामान्यीकरण कर उनके और बाल-मन के बीच तालमेल बैठाना। वह बालक को अपने आसपास की घटनाओं से जोड़ने की जिम्मेदारी निभाता है, ताकि उसकी जिज्ञासा बलवती हो। उसमें कुछ सीखने की ललक पैदा हो। साहित्य का काम विज्ञान को दिशा देना होता है, न कि उसको अपनी दृष्टि बनाकर उसके अनुसार स्वयं को ढाल लेना। किसी रचना में साहित्य की मौजूदगी

ही इस बात का प्रमाण है कि उसमें पर्याप्त वैज्ञानिक बोध है। आज के सन्दर्भ में विज्ञानपरक बालसाहित्य अत्यधिक प्रासंगिक लगते हैं। आज का बालक अपने आसपास की वस्तुओं तथा घटनाओं के प्रति सहज ही उत्सुक और सजग रहता है। विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ साहित्य की गुणवत्ता का विकास भी जरूरी है।

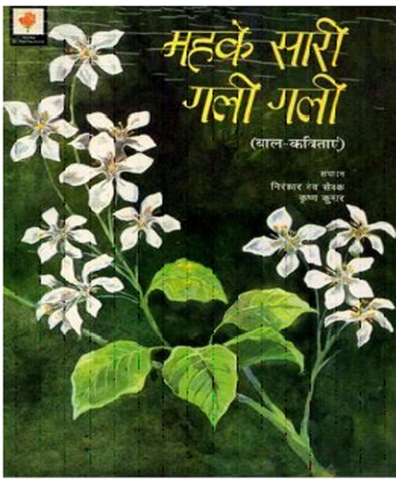

बाल विज्ञान साहित्य लेखन को लेकर इस लेखक का अपना अनुभव बहुत उत्साहजनक तथा आश्वस्ति पैदा करने वाला नहीं है। उसने जब चुनिंदा प्रकाशन गृहों से छपने वाली किताबों तथा पत्रिकाओं, मुख्यतः बालविशेषांकों की सामग्रियों का बारीकी से अवलोकन किया तो तस्वीर निराशाजनक ही लगी। बाल साहित्य की कहानियों में बेसिरपैर की बातें तथा बेतुके प्रकरण सोचने के लिए विवश कर देते हैं कि इस लेखन को बाल साहित्य कहा भी जाए या नहीं। बालकथाओं में लेखक ने अकसर देखा है कि नफरत, प्रतिशोध, हिंसा की बातें देखने में आती हैं जो कहीं से भी बाल मन के अनुरूप नहीं कही जा सकतीं। भूत, प्रेत, डायन, चुड़ैल, को लेकर कथाओं का तानाबाना बुना जाता है। इनमें मृत्यु, फाँसी, जैसी बातें कही जाती हैं जिन्हें नन्हें बच्चों को भला कैसे समझाया जा सकता है। बाल तथा किशोर मन की कोमलता पर हिंसा का कुठाराघात किस तरह के मानस का निर्माण करेगा, इसे सहज ही समझा जा सकता है। यद्यपि इस घटाटोप अंधेरे में कुछ किताबें आशा की किरण बनकर सामने आती हैं। डॉ. मधु पंत की पुस्तक 'गुल्लू और एक सतरंगी' किसी भी भारतीय भाषा में लिखा प्रथम वृहद् बाल तथा किशोरोपयोगी उपन्यास है जो हाल ही में प्रकाशित हुआ है। एक काबिलेतारीफ कोशिश करीब दो दशक पहले जरूर की गयी थी जब प्रख्यात शिक्षक, शिक्षाशास्त्री तथा चिंतक प्रो. कृष्ण कुमार ने निरंकार देव सेवक के साथ मिलकर बीसवीं सदी की चुनिंदा कविताओं का संकलन 'महके सारी गली-गली' शीर्षक से नेशनल बुक ट्रस्ट से प्रकाशित कराया था। लेकिन उसके बाद इस तरह का कोई अन्य प्रयास सामने नहीं आया है। यानी बाल साहित्य के सामने दो तरफा चुनौतियाँ हैं। एक तो यह कि वर्तमान समय में गुणवत्तापूर्ण तथा प्रचुर बाल साहित्य का सृजन नहीं हो रहा है। दूसरा यह कि जो विरासत हमारे पास है उसे भी सहेजने तथा उसके प्रसार का सार्थक प्रयास नहीं हो रहा है।

विज्ञान कथा लेखन

विज्ञान कथा को अंग्रेजी में 'साइंस फिक्शन' कहा जाता है। फिक्शन लैटिन भाषा के शब्द फिक्टस से व्युत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ गढ़ना अथवा रूप देना होता है। हिंदी में आरंभिक 'विज्ञान-कथा' लेखन अंग्रेजी से प्रभावित था। हिंदी की पहली विज्ञान-कथा अंबिकादत्त व्यास की 'आश्चर्य वृतांत' मानी जाती है। उसके बाद बाबू केशव प्रसाद सिंह की विज्ञान-कथा 'चंद्रलोक की यात्रा' थी। इन कहानियों ने हिंदी के पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। उनमें विज्ञान-कथा पढ़ने की ललक बढ़ी। आरंभिक दौर में विज्ञान कथा श्रेणी में हिंदी में प्रकाशित ये कहानियां पाठकों द्वारा खूब पढ़ी और सराही गईं, जो बाद में हिंदी विज्ञान साहित्य के विकास का आधार बना। इसके बावजूद इन्हें हिंदी की मौलिक विज्ञान-कथा नहीं कहा जा सकता। इन रचनाओं में मौलिकता का अभाव था। हिंदी में बालविज्ञान-साहित्य के अभाव का महत्वपूर्ण कारण बालसाहित्य के प्रति बड़े साहित्यकारों में उदासीनता भी है। अधिकांश प्रतिष्ठित विज्ञान लेखक बालसाहित्य लेखन को कम महत्व का काम मानते हैं। यहां तक कि बालसाहित्यकार कहलाना भी पसन्द नहीं करते हैं। दूसरा महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि लेखकों और पाठकों में वैज्ञानिक चेतना की कमी तथा जानकारी का अभाव साफ झलकता है। जो विद्वान विज्ञान में पारंगत हैं, वे कही न कही लेखकीय कौशल की कमी के चलते विज्ञान साहित्य लेखन में असमर्थ हैं। हिंदी की प्रथम मौलिक विज्ञान-कथा का श्रेय सत्यदेव परिव्राजक की विज्ञान-कथा 'आश्चर्यजनक घंटी' को प्राप्त है। इसके अलावा विज्ञान कथाकारों में दुर्गाप्रसाद खत्री, राहुल सांकृत्यायन, डॉ. संपूर्णानंद, आचार्य चतुरसेन, कृश्न चंदर, डॉ. ब्रजमोहन गुप्त, लाला श्रीनिवास दास, राजेश्वर प्रसाद सिंह आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। वर्तमान समय में भी बहुत से साहित्यकार बाल विज्ञान-कथा लेखन का कार्य कर रहे हैं। इनमें सर्वश्री सुबोध महंती, देवेन्द्र मेवाड़ी, अरविंद दुबे, राजीव सक्सेना, विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी, अरविंद मिश्र, जाकिर अली रजनीश, आदि हैं।

बौद्धिकता और कल्पना की बहुआयामी उड़ान के बावजूद बहुत से ऐसे सिद्धान्त हैं जिन्हें बाल साहित्य में सीधे ढालना आसान नहीं है। जैसे कि आपेक्षिकता का सिद्धांत, डार्विनवाद, बरनौली प्रमेय, रासायनिक समीकरणों आदि को बाल साहित्य के रूप में वर्णित करना मुश्किल काम है। मगर हमारे आस-पास बहुत सारी ऐसी घटनाएं घटित होती है जिनका वर्णन बाल साहित्य के रूप में किया जा सकता है। जैसे कि जैव-विविधता, पर्यावरण, ऊर्जा, बल, गति आदि का वर्णन बाल साहित्य के रूप में आसानी से किया जा सकता है। विविध मंचों, संस्थाओं, अकादमियों और पत्र-पत्रिकाओं द्वारा आयोजित होने वाली चर्चायें, संगोष्ठियां, सेमिनार विज्ञान साहित्य लेखन के लिए

बड़े उपयोगी साबित हो सकते हैं। वरन् इनमें अधिकाधिक अभिभावकों तथा बच्चों की भी सहभागिता हो। उनको भी अपने मन और आवश्यकता की बात कहने का अवसर मिले, जिससे उनके अन्दर बिखरी पड़ी विज्ञान के प्रति उदासीनता को दूर किया जा सके। उनकी संवेदनशीलता एवं सामाजिकता को आहत होने से रोककर मनुष्यता के लिए कल्याणकारी वैज्ञानिक सोच को जगाया जाए तथा उनको विज्ञान-बोध कराया जाए।

प्रश्नों की बाल-आकुलता

विज्ञानबोध कराने का तात्पर्य वैज्ञानिक सोच विकसित करने से है। बच्चे अकसर तरह-तरह के प्रश्न पूछते हैं, मसलन कि पक्षी कैसे उड़ते हैं?... मछलियां कैसे तैरती हैं? ... पत्तियों का रंग प्रायः हरा क्यों हैं?... उगता तथा डूबता सूरज लाल क्यों दिखायी देता है? साबुन के बुलबुले रंगीन क्यों दिखायी देते हैं? चंद्रमा की रोशनी शीतल क्यों होती है? आसमान नीला क्यों दिखायी देता है? जब हम किसी वस्तु को ऊपर फेंकते है, तो वह वापस नीचे क्यों आती है? .. आदि। इन प्रश्नों का उत्तर विज्ञान साहित्य के माध्यम से आसानी से दिया जा सकता है। इससे न केवल बच्चे संतुष्ट होंगे बल्कि उनकी विज्ञान की समझ भी बढ़ेगी। बच्चों के अन्दर सहज वैज्ञानिक के गुण होते हैं। वे अपनी हासिल की गई जानकारियों को वैज्ञानिक शब्दावली में नहीं अभिव्यक्त कर सकते, फिर भी उनमें अच्छा शोध-कार्य करने की ललक होती हैं। वे तरकीबें आजमा सकते हैं, और वे पूरी तरह सचेत होकर चीज़ों को उसी तरह देख सकते हैं जैसी वे होती हैं। कभी-कभी बच्चे लगभग स्वतंत्र रूप से पेचीदा वैज्ञानिक परिघटनाओं का पता करते हैं, और ऐसा कभी-कभी संयोग से भी हो जाता है।

रूढ़िगत बेड़ियाँ से मुक्ति

समाज को रूढ़ियों, जादू-टोने, भूत-प्रेत आदि के मकड़जाल से बाहर रखने में पिछली कुछ शताब्दियों से विज्ञान की बहुत महती भूमिका रही है। विज्ञान के कारण ही देश अनेक आपदाओं तथा जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न खाद्यान्न समस्याओं का सामना करने में सफल रहा है। अनेक महामारियों से समाज को बचाने का श्रेय भी विज्ञान को ही जाता है। 'श्वेत क्रांति', 'हरित क्रांति' जैसी अनेक उत्पादन क्रांतियां विज्ञान के दम पर ही संभव हो सकी हैं। इसलिए विज्ञान को साहित्य रूप प्रदान करना आज की आवश्यकता बन चुका है। क्योंकि साहित्य ही वैज्ञानिक सोच को जन सामान्य तक पहुँचाने का सबसे आसान माध्यम है। इसके लिए विज्ञानपरक साहित्य लेखन को बाल साहित्य के रूप में बढ़ावा देना पड़ेगा। हालांकि बाल-मन को पढ़ना बहुत मुश्किल होता है फिर भी अगर हम एक बालक की तरह किसी घटना को देखे, समझे और उसको विज्ञान की कसौटी पर कसते हुए साहित्यिक स्वरूप प्रदान करें, तो एक अच्छे बालविज्ञान साहित्य की रचना कर सकते है। बाल साहित्यकारों को बालकों की सोच, ज्ञान और वर्तमान को ध्यान में रखना होगा। तदनुरूप ही विज्ञान सम्मत बाल साहित्य के सृजन की ओर उन्मुख होना पड़ेगा। आज की पीढ़ी डिजिटल युग की है, जहाँ तेजी से दुनिया सिमटती जा रही है। आजकल के बच्चे मुद्रित पत्र-पत्रिकाओं की अपेक्षा, ऑनलाइन उपलब्ध ई-सामग्रियों के अध्ययन की तरफ ज्यादा आकृष्ट होते हैं। ऐसे में बाल साहित्यकारों द्वारा अपनी रचनाओं को ऑनलाइन भी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। विज्ञान तथा तकनीकी के इस दौर में वैज्ञानिक बालसाहित्य का सृजन एक चुनौतीपूर्ण लेकिन बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। समकालीन हिन्दी बाल साहित्य के श्रेष्ठ रचनाकार श्री देवेन्द्र मेवाड़ी अपनी अलग शैली में बच्चों में विज्ञान को ले जा रहे हैं। अपनी पुस्तक सूरज के आँगन में से देवीदा पात्र गढ़ते हैं तथा बच्चों के साथ संवाद करते हैं। वे तारामंडलों तथा प्रयोगशालाओं की यात्रा से लौटकर आते हैं तथा बच्चों को सौरमंडल की सैर पर ले जाते हैं। वे सभी ग्रहों के साथ उपग्रहों तथा छुद्र ग्रहों की भी चर्चा करते हैं। वे इतने जीवंत ढंग से किस्सागोई के अंदाज में सिलसिलेवार वर्णन करते हैं कि पाठक स्वतः ही उनके साथ यात्रा में शामिल हो जाता है।

सार-संक्षेप

बाल साहित्य का अन्यतम उदाहरण है पंचतंत्र। इसके रचयिता विष्णु शर्मा हैं जो पहली सदी ईसवी के पास थे। पंचतंत्र को दुनिया के श्रेष्ठतम बालसाहित्य में गिना जाता है। इसकी लोकप्रियता यह है कि इस पुस्तक का अनुवाद अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, इटैलियन, अरबी, हेब्रू, उर्दू, फारसी में हो चुका है। पंचतंत्र की मूलकथा गुणाढ्य रचित बृहत्-कथा नामक ग्रंथ पर आधारित है। इसकी कथाओं में पशु-पक्षियों तथा वन्यप्राणियों की कहानियां हैं। दुनिया के शिक्षाशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों का आज यह मानना है कि बच्चों में पशु-पक्षियों के प्रति नैसर्गिक रुचि तथा जिज्ञासा होती है। लेकिन इस बात को एक भारतीय दो हजार साल पहले भलीभांति समझता था। तभी तो वह बाल साहित्य की कालजयी रचनाएं दे सका। पंचतंत्र दुनिया का अनूठा साहित्य है। आज फिर से जरूरत है कि बाल मनोविज्ञान को केंद्र में रखते हुए बाल साहित्य का सृजन किया जाए। जिस तरह से बालकेंद्रित शिक्षण पर बल दिया जा रहा है उसी तरह से प्राथमिकता होनी चाहिए की बालकेंद्रित साहित्य, विशेषकर के बाल विज्ञान साहित्य लिखा जाए।

vigyan.lekhak@gmail.com